पड़ता है और पशु को स्वस्थ होने में भी एक लंबा समय लगता है, अत: इस प्रकार के पशुओं को पशु - शाला से हटा देना चाहिए।

ढ) अफारा/ टिम्पेनाइटिस : इस रोग में पशु के रूमेन या प्रथम अमाश्य में अत्यधिक गैस इकट्ठी हो जाती है। जिसके कारण पशु का पेट फूल जाता है। पशु बार-बार उठता बैठता है। कभी कभी पशु को सांस लेने में भी तकलीफ होती है। यदि पेट की हवा ना निकाली जाए तो पशु मर भी सकता है। पेट की हवा निकालने के लिए सूईनुमा औज़ार ट्रोकार और कैनुला के द्वारा पेट में छेद किया जाता है। इसके साथ ही पशु को एक लीटर अलसी, अरण्डी या सरसों के तेल में 30 मि. ली. तारपीन का तेल और 10 ग्राम हींग डालकर पिलाना चाहिए। कभी भी पशु को अधिक मात्रा में हरा चारा नहीं खिलाना चाहिए। सदैव उसे भूसे मे मिलाकर देना चाहिए, ताकि गैस का निर्माण न हो सके।

ण) बछड़ी/ बछड़े में नाभि सड़ना (नैवेल इल) : यह बीमारी हाल ही में पैदा हुए बच्चों में होती है। जिनकी नाल (बच्चे की माता के गर्भाश्य से जोड़ने वाली) बच्चा पैदा होते-होते टूट गई हो या नाभि नाल को वैज्ञानिक ढंग से ना काटने से या बैठने का स्थान गंदगी वाला हो तो नाभि में संक्रमण हो जाता है। नाभि में मवाद पड़ जाता है। रोग के आरम्भ में बछड़ा सुस्त हो जाता है, दूध नहीं पीता, तेज बुखार आता है और वो सांस जल्दी-जल्दी लेता है। नाभि गीली व चिपचिपी दिखलाई पड़ती है। एक-दो दिन सूजन पड़ने पर नाभि गर्म व सख्त हो जाती है और उसमें बहुत दर्द होता है। कभी - कभी घुटनों व जोड़ों में सूजन आ जाने के कारण बछड़ा लंगड़ाने भी लगता है। इससे बचाव के लिए बछड़ा पैदा होने के स्थान को साफ-सुथरा रखें। नाल गिरने के बाद नाभि को किसी कीटाणु नाशक दवा से साफ करके प्रतिदिन टिंचर-आयोडीन या बीटाडीन आदि उस समय तक लगाते रहना चाहिए जब तक नाभि बिल्कुल सूख न जाए। रोग के लक्षण मालूम पड़ते ही पास के पशु-चिकित्सक की तुरंत सलाह लें और आवश्यक इलाज करायें।

त) सफेद दस्त (व्हाईट स्कोर) : यह नवजात बछड़ों का एक घातक रोग है। जिससे 24 घंटे में मृत्यु हो जाती है। यह रोग एक माह तक के बच्चों को होता है। रोग के आरम्भ में बुखार आता है। भूख कम लगती है और बदहजमी हो जाती है। कुछ समय बाद पतले दस्त आने लगते हैं, जो गन्दे सफेद या पीलापन लिए होते हैं। इनमें कभी-कभी खून भी आता है तथा विशेष प्रकार की बदबू होती है। कभी-कभी पेट फूल जाता हैं, इससे बचाव के लिए बच्चें को पर्याप्त मात्रा में खीस पिलायें तथा गंदगी से बचायें। खीस की मात्रा कम या ज्यादा न हो। उसके वज़न का दसवां हिस्सा एक दिन की खुराक होती है। रोग मालूम होने पर तुरंत चिकित्सक की सलाह लें। दो तीन दिन तक खीस या दूध की मात्रा आधी कर देनी चाहिए। उपचार हेतु एंटीबायोटिक दवाईयां का इस्तेमाल किया जा सकता है।

थ) निमोनिया : यह बीमारी 3 सप्ताह से लेकर 4 माह तक के बच्चों में ज्यादा होती है। गन्दे सीलन युक्त स्थान में यह रोग अधिक फैलता है। रोग के आरम्भ में बछड़ा सुस्त हो जाता है, खाने में रूचि नहीं रहती। सांस तेजी से लेता है, खांसी आती है और आँख व नाक से पानी बहता रहता है और बुखार तेज हो जाता है। रोग बढ़ने पर नाक से बहने वाला पानी गाड़ा व चिपचिपा हो जाता है। सांस लेने में कठिनाई होती है। खांसी तेज हो जाती है और अंत में मृत्यु हो जाती है। इससे बचाव के लिए बछड़ों को साफ व हवादार कमरे में जिसमें सीलन न हो और तेज हवा का झोंके न आते हों, रखाना चाहिए। स्वस्थ्य बछड़ों को रोगी बछड़ों से अलग कर देना चाहिए।

पशुपालक भाईयों को उपयुक्त समस्याओं के बारे में जानकारी होना अति आवश्यक है, ताकि समय से समस्याओं का निदान किया जा सके और पशुपालन से अधिक से अधिक लाभ हो सके।

ਵਧੇਰੇ ਜਾਣਕਾਰੀ ਲਈ ਸੰਪਰਕ ਕਰੋ

ਨਿਰਦੇਸ਼ਾਲਾ ਪਸਾਰ ਸਿੱਖਿਆ

ਗੁਰੂ ਅੰਗਦ ਦੇਵ ਵੈਟਨਰੀ ਅਤੇ ਐਨੀਮਲ ਸਾਇੰਸਜ਼ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ,

ਲੁਧਿਆਣਾ-141004

ਫੋਨ : 0161-2414005, 2414026

पशुओं की प्रमुख स्वास्थ्य समस्याएं एवं उनका समाधान

IMPORTANT DISEASES OF DAIRY ANIMALS

डा. प्रज्ञा भदौरिया

डा. वाई.एस. जादौन

डा. एस. के. कांसल

डा. हरीश वर्मा

FFP FOLDER - 7

ACKNOWLEDGMENT

We are highly thankful to Farmer FIRST Programme, ICAR, New Delhi for providing financial assistance to publish this folder for the benefit of farmers.

ਗੁਰੂ ਅੰਗਦ ਦੇਵ ਵੈਟਨਰੀ ਅਤੇ ਐਨੀਮਲ ਸਾਇੰਸਜ਼ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ,

ਲੁਧਿਆਣਾ-141004

हमारे देश में पशुओं की संख्या संसार के अन्य सभी देशों से कहीं अधिक है। देश की आर्थिक स्थिति में पशुपालन का महत्व इस बात से प्रकट होता है कि, भारत विश्व का सर्वाधिक दुग्ध उत्पादक देश है। वर्तमान में वाणिज्यिक पशुपालन एक सशक्त स्वरोजगार के रूप में उभर कर आया है। यदि देखा जाये तो पशु प्रबन्धन, विज्ञान के साथ एक कला भी है। समुचित और उत्तम व्यवस्था के ऊपर ही पशु व्यवसाय की सफलता निर्भर करती है। अत: यह अति-आवश्यक है कि, जो भी पशुपालक इस व्यवसाय से जुड़े हुए हों, उन्हें पशुओं से सम्बंधित सभी समस्याओं का भली भाँति ज्ञान हो एवं उनके निदान के तरीकों से भी परिचित हों। इन्हीं में से कुछ प्रमुख समस्याओं का ब्यौरा कुछ इस प्रकार से है :

1. दुग्ध उत्पादन में गिरावट :

दूध गाय व भैंसों का प्रमुख उत्पाद होता है। अत: पशुपालन व्यवसाय की नींव ही दूध की मात्रा एवं उत्पादन पर निर्भर करती है। एक पशुपालक के लिए अति-आवश्यक है कि, वह सदैव ही अच्छी नस्ल के दुधारू पशुओं का चुनाव करे, उनका सही प्रबन्धन करे। उनके पोषण, प्रजनन एवं स्वास्थ्य से जुड़े सभी पहलुओं से भली भांति परिचित हों। दुधारू पशुओं के पोषण का खास ख्याल रखना चाहिए। मुख्यत: संकर प्रजाति के पशुओं का, जो ज्यादा मात्रा में दूध देते हैं, उन्हें आवश्यक पौष्टिक आहार जिसमें हरा चारा, खनिज लवणों से युक्त दाना, गुड़ शीरा व तेल जैसे पदार्थ आवश्यकता अनुसार देने चाहिए। गाय या भैंसों को एक निश्चित समय पर भोजन दिया जाना जरूरी है। रोजाना खली में मिला चारा दो वक्त दिया जाना चाहिए। इसके अलावा बरसीम, ज्वार व बाजरे का चारा दिया जाना चाहिए। पशुपालक यह भी ध्यान रखें कि आहार बारीक, साफ सुथरा हो ताकि जानवर अपने आहार को चाव से खा सके। इन्हें भरपूर मात्रा में पानी अवश्य पिलाया जाए। इनके स्वास्थ्य के लिए पानी बहुत जरूरी है। यदि हरे चारे की कमी हो, तब दूसरा विकल्प अपनाना चाहिए। यूरिया से उपचारित भूसा भी पशुओं को खिलाया जा सकता है। यह अवश्य देखें कि, उनके आहार में कैल्शियम और फॉस्फोरस जैसे लवण पर्याप्त मात्रा में उपस्थित हैं या नहीं। विशेषकर गाभिन पशुओं में। इनमें से किसी भी घटक में कमी होने का सीधा अर्थ होता है, कि दूध उत्पादन कम हो जाना। पशु को कैल्शियम और फास्फोरस 2:1 के अनुपात में देना चाहिए तथा विटामिन डी भी देना चाहिए ताकि कैल्शियम और फॉस्फोरस पशु के शरीर में अच्छी तरह से पचा लिए जाएं। इसलिए व्यस्क पशु को 40-50 ग्राम प्रतिदिन खनिज लवण देना चाहिए। दूध की मात्रा बढ़ाने के लिए बिनौले का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। इसके अलावा कुछ प्राकृतिक हर्बल दुग्ध वर्धक तत्व जैसे कि शतावरी और जैवन्ती भी पशुओं को दिए जा सकते हैं।

2. प्रजनन समस्याएं :

अ) गाय व भैंसों का देर से युवा होना : साधारणत: युवावस्था देशी गायों में 17-27 महीने, संकरगायों में 12-13 महीने व भैंसों में 24-30 महीने हैं। परंतु कभी कभी इसमें 3-4 वर्ष लग जाते हैं। इसका मुख्य उपाय है कि पशुओं को जन्म पश्चात् से ही सही प्रबन्धन, विशेषकर उनके पोषण का ध्यान रखा जाये, क्योंकि पशु को दिए जा रहे आहार का सीधा प्रभाव उसके विकास के दर पर पड़ता है।

ब) अनियमित प्रजनन : प्राय: ऐसा देखा गया है, कि प्रथम बार गर्भित होने के बाद गाय व भैंस दूसरी बार देर से गर्भित होती है, जिसका मुख्य: कारण है, जनन रोग तथ पशु के ऋतुकाल (हीट) का ठीक से पता न चलना। गायों और भैंसों दोनों का यौन (कामोत्तेजना) 18-21 दिन में एक बार 18-24 घंटे के लिए होता है। लेकिन भैंस में, चक्र गुपचुप तरीके से होता है और किसानों के लिए एक बड़ी समस्या प्रस्तुत करता है। किसानों को अलसुबह से देर रात तक 4-5 बार जानवरों की सघन निगरानी करनी चाहिए। उत्तेजना का गलत अनुमान बांझपन के स्तर में वृद्धि कर सकता है। उत्तेजित पशुओं में दृश्य लक्षणों का अनुमान लगाना काफी कौशलपूर्ण बात है। जो किसान अच्छा रिकार्ड बनाए रखते हैं और जानवरों की हरकतें देखने में अधिक समय बिताते हैं, बेहतर परिणाम प्राप्त करते हैं। इसके लिए पशु-चिकित्सक की सलाह लेना भी अति आवश्यक है।

स) बयाँत का अधिक अंतराल होना : गाय व भैंसों का बयाँत अंतराल लगभग 13-15 महीने होता है, यदि पशुओं में यह अधिक देखा गया है तो इसके सुधार के लिए पशु के भोजन पर विशेष ध्यान देना चाहिए, पशु के ऋतुकाल (हीट) का सही समय पर पता लगाना चाहिए एवं उनका प्रजनन सही विधि द्वारा करवाना चाहिए। कभी - कभी कृत्रिम गर्भाधान की विधि में त्रुटि के कारण, पशु गर्भित नहीं हो पाता और उसका असर बयाँत के अंतराल को बढ़ाता है।

ड) प्रजनन पुनरावृत्ति : यह संकर गायों तथा भैंसों में अधिक मिलती है। पशु बार-बार ऋतु-काल (हीट) में आ जाता है, पर गर्भधारण नहीं करता। इसके कई कारण हो सकते हैं, जैसे कि सही ढ़ंग से कृत्रिम गर्भधान न होना, पशु में ठीक समय पर ऋतुकाल (हीट) या उसके लक्षणों का प्रकट न होना, जिसके कारण उचित समय पर गर्भित न हो पाना। आहार व्यवस्था में त्रुटि होना, जिसके कारण पशु गर्भधारण करने में असमर्थ होता है। प्रारंभिक अवस्था में गर्भपात या भ्रूण की मृत्यु होने से भी प्रजनन पुनरावृति की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इस स्थिति में सदैव ही पशु-चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए।

ढ) शांत ऋतुकाल (साइलेंट हीट) : यह समस्या मुख्यत: भैंसों में ग्रीष्म ऋतु में अधिक देखने को मिलती है। इस अव्स्था में डिम्बक्षरण तो होता है, परंतु पशु हीट के सामान्य लक्षणों को प्रदर्शित नहीं करता। हीट के लक्षणों की अनुपस्थिति में यह पता नहीं चल पाता, कि पशु ऋतु काल या (हीट) में कब आया, अत: उसका कृत्रिम गर्भाधान भी नहीं किया जा सकता। इससे निपटने के लिए ये अति आवश्यक है, कि भैंसों को गर्मी से बचा कर रखा जाये, उन्हें नहलाया जाये। उनके प्रजनन सम्बन्धी सभी रिकॉर्ड रखे जाएं, ताकि उनके प्रजनन चक्र का सही हिसाब लगाकर उनके ऋतुकाल का अंदाज लगाया जा सके। पशु हीट में है या नहीं ये पता लगाने के लिए उत्तेजक सांड का प्रयोग भी किया जा सकता है।

फ) जेर न गिरना : यह गाय व भैंसों की आम समस्या है, जिसमें जन्म देने के पश्चात् जेर नहीं गिर पाती। ये समस्या मुख्यत: उन पशुओं में होती है जिनमें कठिन जनन प्रसव हुआ हो। गाय व भैंसों में 8-10 घंटों तक जेर न गिरने से कोई हानि नहीं होती है, परंतु उसके पश्चात् भी जेर न गिरे तो अवश्य ही पशु चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए। पशु को बाँस की पत्तियों, गुड़ व अजवाईन का शीरा बनाकर पिलाना चाहिए।

3. स्वास्थ्य समस्याएं :

अ) परजीवी संक्रमण : पशुओं में मक्खियों, मच्छरों एवं जूँ से होने वाली परेशानियों को सभी पशु पालक भली-भांति जानते हैं, जिसके कारण पशु न तो ठीक प्रकार से दाना खा पाते हैं एवं स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यह परजीवी उनका खून चूसते हैं और उन्हें परेशान करते हैं। इस समस्या की रोकथाम के लिए पशु के आस-पास सफाई रखी जाये, गड्ढ़ों में पानी जमा न होने दिया जाए। गोबर को पशुग्रहों से दूर फेंक कर सही ढ़ंग से एकत्रित किया जाना चाहिए। पशुओं की समय समय पर सफाई की जाये, उन्हें नहलाया जाये।

ब) मुँह व खुर पका रोग : यह गाय व भैंसों का एक प्रमुख संक्रामक रोग है, जिसमें पशु के मुँह से लार टपकती है, मुँह, मसूढ़ों, होंठ, जीभ व पैरों में फफोले बनने लगते हैं। पशु खाना पीना बंद कर देता है। दूध उत्पादन क्षमता में भी कमी आ जाती है। इस रोग से बचने के लिए पशु पालकों को लाल दवा या बोरिक एसिड व फिटकरी के घोल में दिन में 3-4 बार मुँह व पैर के छालों को धोना चाहिए। बचाव के लिए पशुओं का बरसात से पहले टीकाकरण करवाना चाहिए।

स) ऐन्थ्रैक्स : इस रोग में पशु की मृत्यु अचानक ही हो जाती है। नाक, मुँह व अन्य प्राकृतिक छिद्रों से खून बहने लगता है। यह अचानक से होने वाला रोग है, एक बार रोग हो जाने पर इसका बचाव करना बहुत कठिन है। अत: यह अतिआवश्यक है, कि पशुओं का इस रोग के लिए टीकाकरण करवाना चाहिए।

ड) क्षय रोग/टी.बी. : मनुष्यों की तरह गाय व पशुओं में भी क्षय रोग होता है। इस रोग में पशु कमजोर होने लगता है, उसका वजन घटने लगता है। उसे खांसी आती है व दूध भी काफी मात्रा में कम हो जाता है। यह एक धीरे-धीरे बढ़ने वाला रोग है, परन्तु रोग के अत्यधिक बढ़ जाने से पशु की मृत्यु भी हो जाती है। पशु में इस रोग का इलाज सार्थक नहीं है, क्योंकि इलाज बहुत मंहगा